कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर, होशंगाबाद

कृषि संदेश

अंक – 12 | Www.kvkhoshaagabad.com | सित.–2020

संरक्षक
डॉ अतुल सेठा
अध्यक्ष
भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविदनगर

श्री अनिल अग्रवाल
चैयरमेन
कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर

मार्गदर्शक
डॉ अनुपम मिश्रा
निदेशक (कृ.प्रौ.अनु.अ.सं)
भा.कृ.आ.प. झोन–9 जबलपुर

संपादक मण्डल
ब्रजेश कुमार नामदेव
प्रभारी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख

डॉ संजीव कुमार गर्ग
वैज्ञानिक (कृषि प्रसार)

डॉ देवीदास पटेल
वैज्ञानिक (पादप प्रजनन)

लवेश कुमार चौरसिया
वैज्ञानिक (उद्यानिकी)

डॉ आकांक्षा पांडे
वैज्ञानिक (गृह विज्ञान)

डॉ दिवाकर वर्मा
वैज्ञानिक (पशुपालन एवं प्रबंधन)

डॉ प्रवीण सोलंकी
कार्यक्रम सहायक (मृदा विज्ञान)

पंकज शर्मा
कार्यक्रम सहायक (प्रक्षेत्र प्रबन्धक)

राहुल माझी
कार्यक्रम सहायक (कम्प्यूटर)

विकास कुमार मोहरीर
सहायक

पशु स्वस्थ्य शिविर का आयोजन

कृषि विज्ञान केंद्र, गोविंदनगर द्वारा पिपरिया तहसील मे स्थित केंद्र द्वारा अंगीकृत गाँव चाकर मे पशु स्वस्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर मे कृषि विज्ञान केंद्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर दिवाकर वर्मा, पि. परिया तहसील के पशुचिकित्सा अधिकारी डॉक्टर संजय सराठे व अन्य सहयोगी उपस्थित थे। शिविर मे विभिन्न प्रकार के पशु जैसे– गाय, बैल, बछिया, बछड़े, मुर्गी कुल मिलाकर 71 पशुओ का उपचार किया गया । बर्षा ऋतु मे पशुओ को बीमारियों से बचाने के लिए घर घर जाकर गलघोटु व लंगड़ा बुखार का टीकाकरण किया गया। शिविर मे पशुओ के इलाज के साथ साथ 16 किसानो को मुफ्त मे दवा का वितरण भी किया गया।

एक दिवसीय सेवारत कृषि विस्तार अधिकारियों का जागरूकता कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर, होशंगाबाद द्वारा एक दिवसीय सेवारत वरिष्ट कृषि विस्तार एवं ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियों के लिए "मक्का की फसल में फाल आर्मी

वर्म कीट के प्रबंधन" पर जागरूकता कार्यक्रम संपन्न कराया गया। इस कार्यक्रम में केंद्र के प्रभारी एव कीट वैज्ञानिक ब्रजेश कुमार नामदेव ने फाल फाल आर्मी वर्म कीट के प्रबंधन पर विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान की, इस कार्यक्रम में श्री व्ही.पी. रघुवंशी SDO Agri-Pipariya), श्री के.एस गुर्जर SADO Bankhedi एवं उद्यानिकी वैज्ञानिक लावेश कुमार चौरसिया उपस्थित रहे।

कौशल विकास प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर होशंगाबाद द्वारा सब्जी वर्गीय फसलों की संरक्षित खेती एवं उनके समन्वित प्रबंधन पर 10 दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण का शुभारंभ किया गया जिसमे मुख्य अतिथि श्री राजकुमार राणा जी ने अपने सम्बोधन में प्रशिक्षणार्थियों को खेती में रुचि लेकर अतीतिरिक्त आय उपार्जन करने का मार्गदर्शन दिया कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी डॉ संजीव कुमार गर्ग ने भी प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए कृषि में नवाचार अपनाने हेतु मार्गदर्शन दिया फिर प्रशिक्षण के निर्देशक एवं कीट वैज्ञानिक ब्रजेश कुमार नामदेव ने सब्जी में बीज उपचार एवं समन्वित कीट एवं रोग प्रबंधन पर पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से विस्तृत जानकारी प्रदान की जिसे प्रशिक्षणार्थियों द्वारा सराहा गया इस कार्यक्रम में होशंगाबाद से बन खेड़ी एवं पिपरिया विकासखंड के 17 प्रशिक्षणार्थी ने भाग लिए।

डायग्योस्टिक टीम ने खेतो में पहुंचकर कीट रोगों से बचने किसानों की दी गई सलाह

कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर जिल होशंगाबाद के कृषि वैज्ञानिक द्वारा ग्राम बाचावानी, कुर्सी ढाना एवं केसला में कृषको के प्रक्षेत्र पर डायग्नोस्टिक फील्ड विजिट किया गया इस दौरान धान, सोयाबीन, अरहर, तिल एवं गन्ने की फसल का निरीक्षण किया गया धान की फसल में बैक्टीरियल ब्लाइट का प्रकोप देखा गया जिसकी प्रबंधन के लिए कृषकों को सलाह दी गई इसके साथ ही सोयाबीन की फसल में येलो मोजैक वायरस एवं स्टेम फ्लाई का भी प्रकोप देखा गया जिसके प्रबंधन के लिए कृषकों को सलाह दी गई

कृषि वैज्ञानिको की सोयाबीन, मक्का एवं धान की फसल हेतु सलाह

कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर, जिला होशंगाबाद द्वारा पिपरिया ब्लोक में ग्राम खैरीकला, बरुआढाना, तारोंन कला में नैदानिक प्रक्षेत्र भ्रमण किया गया जिसमे खरीफ में लगी हुई फसलो सोयाबीन, मक्का, धान फसलो का निरिक्षण किया गया इस दौरान सोयाबीन फसल में येलो मोजेक (पितसिरा) रोग देखा गया जिसके लिए कृषि विज्ञानं केंद्र के कीट वैज्ञानिक ब्रजेश कुमार नामदेव ने किसानो को बताया की येलो मोजेक रोग सफेद मक्खी के द्वारा फैलता है जो की एक विषाणु जनित रोग है । इसके प्रबंधन के लिए ब्रजेश कुमार नामदेव ने किसानो को सलाह दी की प्रभावित पौधो को उ खाड़कर जमीं में गड़ा दे एवं सफेद मक्खी के प्रबंधन हेतु कीटनाशी थायोमेथाक्साम 25WG को 100 ग्राम प्रति एकड़ की दर से या एसिटामाईप्रेड 50 WP की 50 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिडकाव करे द्य भ्रमण के दौरान मक्का की फसल में कही कही फाल आर्मी वर्म कीट का प्रकोप देखा जा रहा है जिसके लिए नामदेव जी ने बताया की फाल आर्मीवर्म कीट के प्रबन्धन के लिए 15 फेरोमान ट्रेप प्रति एकड़ की दर से लगाये एवं "T" आकार की खुटियाँ 100 प्रति एकड़ लगवाये इसके अलावा जैविक कीटनाशी मेटाराइजियम एनिसोप्ली अथवा बेवेरिया बेसियाना 1 लीटर प्रति हेक्टेयर का छिडकाव करे एवं रासायनिक कीटनाशी थायोमेथाक्सम 12-6%+ लेम्डासाईहेलोथ्रिन 9-5% ; स्पईनोटेरम 11-7% का छिडकाव करें। साथ ही पादप प्रजनक वैज्ञनिक डॉ देवीदास पटेल ने धान की फसल में खरपतवार प्रबंधन gsrw मेटसल्फयूरॉन मिथाइल. क्लोरीम्यूरॉन 20% 4 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव की सलाह दी

आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण

क्र	विषय	प्रशिक्षक	लाभार्थी
1	खरीफ फसल एवं उन्नत किस्मों	डॉ देवीदास पटेल (वैज्ञानिक पौध प्रजनक)	38
2	मृदा परिक्षण	डॉ. प्रवीन सोलंकी (लेब तकनीशियन)	21
3	खरीफ फसल में बीजोपचार	ब्रजेश कुमार नामदेव (वैज्ञानिक कीट विज्ञान)	18
4	कृषि में लाभदायक कीट एवं सूक्ष्म जीव का कृषि में महत्व	ब्रजेश कुमार नामदेव (वैज्ञानिक कीट विज्ञान)	26
5	पशुओ में होने बाली बीमारियों से सुरक्षा	डॉ दिवाकर वर्मा (वैज्ञानिक पशुपालन)	12
6	ऑडियो कान्फ्रेंस	ब्रजेश कुमार नामदेव (वैज्ञानिक कीट विज्ञान)	163

कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर के वैज्ञानिक गांव–गांव जाकर बता रहे गाजर घास के दुष्परिणाम

कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर द्वारा गाजर घास उन्मूलन सप्ताह का आयोजन 16 से 22 अगस्त को किया जा रहा है। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा गांव–गांव पहुंचकर गाजर घास के दुष्परिणाम एवं समाप्त करने की जानकारी दे रहे है। कार्यक्रम के अंतर्गत सिवनी मालवा के ग्राम शिवपुर, अर्चना में प्रभारी वरिष्ठ वैज्ञानिक बृजेश नामदेव ने बताया कि गाजर धास (पार्थेनियम हिस्टोफोरस) एक कंपोजिटी कुल का खरपतवार हैं। भारत में सर्वप्रथम 1955 में पूना (महाराष्ट्र) में देखा था। हमारे देश में इसका प्रकोप 1955 मे अमेरिका व मैक्सिको से आयातित गेहूं फसल के साथ हुआ। वर्तमान में यह पूरे देश में लगभग 35 मिलियन हेक्टयर क्षेत्र में फैल चुका है। इसके एक पौधे से करीब 10 से 25 हजार अत्यंत सूक्ष्म बीज पैदा होते हैं। धास के लगातार संपर्क में रहने से मनुष्यों में डरमेटाइटिस, एक्सिमा एलर्जी, बुखार, दमा आदि रोग होने की संभावना रहती है। दुधारू पशु द्वारा सेवन करने से दूध में कड़वाहट एवं दुग्ध उत्पादन क्षमता में गिरावट आती है। गाजर घास खरपतवार से फसलों में करीब 30 से 40 प्रतिशत की कमी हो सकती है। ऐसे करें रोकथाम गाजर घास से बढ़ते दुष्यपरिणामों को देखते हुए नियंत्रण के उपाय को बताया। गाजर धास में फूल आने से पहले जड़ से निक. ालकर कम्पोस्ट बना सकते हैं। घर के आस–पास गेंदें के पौधे लगाकर गाजर के फैलाव को कम किया जा सकता है। वर्षा ऋतु मेक्सिकन बीटल (जाइगोग्रामा बाइकोलेटा) नाम के कीट को गाजर घास पर छोड़ना चाहिए। जो की मुख्यरूप से गाजरधास को खाता है।

राष्ट्रीय पोषण माह का उत्सव मनाया गया

17 सितंबर 2020 को कृषि विज्ञान केंद्र गोविंद नगर एवं इफको होशंगाबाद के सहयोग से ग्राम नागवाडा में राष्ट्रीय पोषण माह का उत्सव मनाया गया जिसके अंतर्गत पोषण अभियान एव महिला कृषक प्रशिक्षण का कार्यक्रम किया गया द्य सव. र्प्रथम केंद्र के प्रभारी डॉ संजीव कुमार ने माताओं को पोषण व स्वच्छता सम्बंधित जानकारी देते ही कहाँ की प्रत्येक घरो में पोषण वाटिका होना चाहिए जिससे अपने घर भोजन थाली मे दाल, सब्जी, चावल, सलाद होना चाहिए एवं पोषण थाली के महत्व के बारे में बताया साथ ही गावं मे

अपने अपने आसपास स्वच्छता अपनाएं तो 50% बीमारियों कों दूर किया जा सकता है उद्यानिकी वैज्ञानिक लवेश कुमार चौरसिया द्वारा बताया गया कि पोषण वाटिका कैसे बनाई जा सकती है छोटी जगह में किस तरीके से उसका मानचित्र बनाकर कितनी दूरी पर कौन कौन सी सब्जी लगाई जाती है विस्तृत जानकारी प्रदान की गई, बृजेश कुमार नामदेव द्वारा बताया गया कि डायरिया से कैसे बचा जा सकता है और कैसे स्वस्थ स्वच्छता संबंधित छोटे–छोटे उपाय कर महामारी डायरिया से बचा जा सकता है तथा छोटे बच्चो को कुरकुरे न खाने की सलाह दी एवं 12 महीने के हिसाब से कौन कोन सी सब्जी खानी चाहिए तथा कौन कोन सी नहीं खानी चाहिए इसके बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई इस कार्यक्रम में डॉ आकांक्षा पांडे द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से महिला में हीमोग्लोबिन की मात्रा कैसे बढ़ाया जा सकता है उसकी जानकारी माताओं को प्रदाय की अंत में इफको के जिला प्रवंधक राजेश पाटीदार ने इफको के बारे में जानकारी प्रदान कर सब्जी बीज की मिनी कीट माताओ को बांटे एवं घर के पीछे खाली जगह में लगाने के लिए आग्रह किया, कार्यक्रम के दौरान मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान एवं केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कृषक महिलाओ से विडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से बातचीत का लाइव टेलीकास्ट को दिखाया गया इस कार्यक्रम में 92 महिलाये उपस्थित रही

आत्म निर्भर भारत की ओर बढ़ते कदम

पीपलपुरा गांव को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र गोविंदनगर होशंगाबाद से कृषि वैज्ञानिक ब्रजेश नामदेव एवं पशुपालन वैज्ञानिक डॉ दिवाकर वर्मा उपस्थित रहे ।
इस कार्यक्रम में किसान बन्धु, मजदूर, आजीविका से जुड़ी मातृशक्ति युवाध्युवतियों के लिए तकनीकी से संबंधित एवं गांव को आत्म निर्भर बनाने के लिए कृषक प्रशिक्षण दिया गया जिसमें डॉ दिवाकर वर्मा द्वारा बताया कि पशुओं की देखभाल कैसे करें अच्छे नस्ल के गाय बकरी मुर्गी पालन से संबंधित लाभ कैसे ले योजनाओं की जानकारी दी।साथ ही कृषि वैज्ञानिक ब्रजेश नामदेव द्वारा बताया कि उन्नत बीज उपचार कर अधिक फसल उत्पादन तकनीक विधि से कैसे करें , फसलों में लगने वाले कीटो से फसलों को कैसे बचाएं उपाय बताया गया ।

मुख्य रूप से पुराने बीज जैसे ज्वार कौदो –कुटकी बाजरा जिसमें पोषक तत्व अधिक पाया जाता है इसे उत्पादन करे की सलाह दी। साथ ही जिला प्रमुख द्वारा माताऐ बहनों को अपने घरों में स्नागार , बर्तन साफ करते समय बहने वाले पानी की सदुपयोग कर अन्नापूर्णा मण्डपम् बनाकर घर में ही सब्जी उत्पादन कर शुद्ध जैविक सब्जी उत्पादन करें एवं बाजार की रासायनिक सब्जी के नुकसान के बारे में बताया गया । इस कार्यक्रम में आचार्य/दीदी उपसंकुल प्रमुख संयोजक मण्डल सदस्य जिला प्रमुख उपस्थित रहे।

समाचार पत्र

कृषि वैज्ञानिकों ने खेतों में जाकर किया फसलों का निरीक्षण, किसानों को बताये तकनीकी उपाय

जागरण होशंगाबाद। जिला स्तरीय फसल निगरानी दल द्वारा बाबई एवं सोहागपुर क्षेत्र के आंचलखेड़ा, शुक्करवाड़ा, फार्म, खिड़िया, गाजनपुर, तालकेसरी, सिरवाड़ चीचली, रैपुरा,शिवपुर, सिमरोधा, गुराड़िया, बुधवाड़ा, फुरतला एवं सेमरीहरचंद आदि ग्रामों में किसानों के खेतों में जाकर फसल का निरीक्षण किया। निरीक्षण दल में कृषि विज्ञान केंद्र बनखेड़ी के कृषि वैज्ञानिक डॉ. बृजेश नामदेव, डॉ संजीव गर्ग, गोविंद मीना सहायक संचालक राजीव यादव, जेएस मीना और बाबई के कृषि विकास अधिकारी भी मौजूद थे।

कृषि विभाग के सहायक संचालक जितेंद्र सिंह ने बताया कि धान की फसल में वैक्टीरियल लीफ ब्लाईट रोग से पौधे के पत्तियों के किनारे ऊपरी भाग से शुरु होकर मध्य भाग तक सूखने लगते हैं। सूखे पीले पत्तों के साथ-साथ राख के रंग जेसे धब्बे भी दिखाई देते है। इसके प्रबंधन हेतु खेत में नाइट्रोजन की पूर्ति के लिए यूरिया की टाप ड्रेसिंग नहीं करनी चाहिए एवं कापर ऑक्सिक्लोराइड 400 ग्राम स्टेप्टो साइक्लिन 30 ग्राम प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी के साथ प्रभावित फसल पर छिड़काव करें। वहीं धान की फसल में वैक्टीरियल लीफ स्ट्रीक जिसके कारण धान की पत्तियों की नसों के बीच भूरे रंग की धारिया बन जाती हैं। इस रोग के नियंत्रण हेतु कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का सुगामाइसिन 300 ग्राम अथवा कॉपर ऑक्सि क्लोराइड 400 ग्राम स्ट्रेप्टो साइक्लिन 30 ग्राम प्रति एकड़ की दर से 150 लीटर पानी के साथ प्रभावित फसल पर छिड़काव करें। इसके अलावा धान में ब्लास्ट रोग अर्थात पत्तियों पर नाव के समान धब्बे जिनमें भूरापन दिखाई पड़ता हैं। नियंत्रण के लिए ट्राईसाईक्लाजोल 1 मिलीलीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे। उड़द की फसल पीला मोजेक रोग के नियंत्रण हेतु किसान थायोमेथेक्जाम 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। इस समय धान की फसल कही-कही गभोट की अवस्था में है। जबकि कही बालियां निकलना शुरु हो गयी हैं। फाल्स स्मट आभासी कंडवा रोग की समस्या बहुत देखी गयी हैं। किसान इस रोग के लक्षण दिखाई पड़ने पर रोग से बचाव जैसे धान की फसल में लगभग 50 प्रतिशत तक की बालियां आ जाए उस अवस्था पर एजोक्सीस्ट्राबीन, डाइफेनो कोनाजोल 200 एमएल अथवा प्रोपीकोनाजोल 200एल अथवा कॉपर आक्सी क्लोराइड 400 ग्राम या टेबूकोनोजोल ट्राई लोक्सीस्टाबीन की 100 ग्राम प्रति एकड़ क दर से 200 लीटर पान के साथ छिड़काव करे दें।

धान की फसल पर तना छेदक कीट का प्रकोप फसल पर यह दिखाई पड़ने पर इस कीट के नियंत्रण क्लोरेंट्रानीलीप्रोल लैब्डा-साइहैलोथ्रिन एम्प्लिगो 80 एमए अथवा केर्टाप हाइड्रोक्लोराइड मोर्टार 200 ग्राम एमएल अथवा कापर आक्सीक्लोराइड 400 ग्राम अथवा फिप्रोनिकल 250 एमएल प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी के साथ प्रभावित फसल पर छिड़काव करें। धान की फसल पर हरा फुदका ग्रीन लीफ हापर के आक्रमण से धान की पत्तियां हल्की पीली पड़ जाती हैं एवं उनका अगला शिरा नारंगी रंग का हो जाता हैं। जिससे पौधों की बढ़वार रुक जाती हैं। यह कीट धान की फसल में टुन्ग्रो वायरस रोग का वाहक भी है। इसके नियंत्रण पाईमेट्रोजीन 50 की 120 ग्राम अथवा डिनोटे युरान 20 की 80 ग्राम की मात्रा प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी के साथ प्रभावित फसल पर तुरंत छिड़काव करें। छिड़काव के दौरान साफ पानी की पर्याप्त मात्रा ले व छिडकाव खेतों की मेड़ पर लगे खरपतवार पर भी करें यदि हो सके तो खेत की मेढ़ो खरपतवार से मुक्त रखे। जिससे रोग एवं हानिकारक कीटो को खेत के आसपास आश्रय ना मिले।

वाटिका बनाकर प्राप्त करें पोषण आहार: गर्ग

बनखेड़ी| स्वच्छ एवं पोषणयुक्त भोजन चाहते हो तो हमें अपने घरों में पोषण वाटिका का निर्माण करना होगा। जिससे हम बाजार में मिलने वाली रासायनिक युक्त एवं हानिकारक आहार से बच सकते हैं। यह बात कृषि विज्ञान केंद्र पलियापिपरिया और इफ्को होशंगाबाद द्वारा नागवाड़ा में आयोजित महिला कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान केवीके वैज्ञानिक डॉ. संजीव गर्ग ने कही। उन्होंने कहा कि जैविक खाद के उत्पाद से ही हम पौष्टिक और स्वादिष्ट आहार प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए हमें अपने घरों में एक पोषण वाटिका का निर्माण करना होगा।

वैज्ञानिकों ने सोयाबीन, मक्का व धान की फसल के लिए किसानों को दी सलाह

बनखेड़ी, देशबन्धु। कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर जिला होशंगाबाद द्वारा पिपरिया ब्लॉक में ग्राम खैरीकलाए बरुआढानाए तरोन कला में नैदानिक प्रक्षेत्र भ्रमण किया गया जिसमे खरीफ में लगी हुई फसलों सोयाबीनए मक्काए धान फसलो का निरीक्षण किया गया इस दौरान सोयाबीन फसल में येलो मोजेक ;पितसिराद्ध रोग देखा गया जिसके लिए कृषि विज्ञानं केंद्र के कीट वैज्ञानिक ब्रजेश कुमार नामदेव ने किसानो को बताया की येलो मोजेक रोग सफ़ेद मक्खी के द्वारा फ़ैलता है जो की एक विषाणु जनित रोग है द्य इसके प्रबंधन के लिए ब्रजेश कुमार नामदेव ने किसानो को सलाह दी की प्रभावित पौधो को उखाड़कर जमीं में गड़ा दे एवं सफ़ेद मक्खी के प्रबंधन हेतु कीटनाशी थायोमेथाक्साम 25ॅळ को 100 ग्राम प्रति एकड़ की दर से या एसिटामाईप्रेड 50ॅच् की 50 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिडकाव करे द्य भ्रमण के दौरान मक्का की फसल में कही कही फाल आर्मी वर्म कीट का प्रकोप देखा जा रहा है जिसके लिए नामदेव जी ने बताया की फाल आर्मीवर्म कीट के प्रबन्धन के लिए 15 फेरोमान ट्रेप प्रति एकड़ की दर से लगाये एवं श्ज्श् आकार की खुटियाँ 100 प्रति एकड़ लगवाये इसके अलावा जैविक कीटनाशी मेटाराइजियम एनिसोप्ली अथवा बेवेरिया बेसियाना 1 लीटर प्रति हेक्टेयर का छिडकाव करे एवं रासायनिक कीटनाशी थायोमेथाक्सम 12ण्6: लेम्डासाईहेलोथ्रिन 9ण्5: या स्पईनोटेरम 11ण्7: का छिडकाव करें। साथ ही पादप प्रजनक वैज्ञनिक डॉ देवीदास पटेल ने धान की फसल में खरपतवार प्रबंधन हेतू मेटसल्फ्यूरॉन मिथाइल क्लोरीम्यूरॉन 20: 4 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव की सलाह दी।

आंगनवाडी कार्यकर्ता, सुपरवाइजर, महिला किसान को किया प्रशिक्षित

बनखेड़ी @ पत्रिका. गोविंदनगर कृषि विज्ञान केंद्र की ओर से राष्ट्रीय पोषण माह पर एनीमिया के बचाव व पोषण वाटिका विकसित करने पर कार्यशाला आयोजित की। इसमें आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सुपरवाइजर एवं महिला किसान को प्रशिक्षण दिया। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी वैज्ञानिक डॉ. संजीव कुमार गर्ग ने कहा कि पोषण माह के तहत जिले के कृषि विज्ञान केंद्र की ओर से भी राष्ट्रीय पोषण माह के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक ब्रजेश कुमार नामदेव ने एनीमिया से होने वाले नुकसान कारण और उपाय के बारे में जानकारी दी। पत्रिका

मिट्टी में मिठास: टमाटर के साथ उगाई स्वीट कॉर्न, डबल के साथ मुनाफा भी हो गया डबल

मोहम्मद जावेद | बनखेड़ी

1996 में बीएससी करने के बाद तिंदवाडा के गोपाल कुशवाह ने परिवार के रोजगार को नए तरीके से करने की ठानी। टमाटर के साथ स्वीट कॉर्न की खेती कर गोपाल ने बनखेड़ी ही नहीं, पूरे जिले में अलग पहचान बनाई है। 45 साल के गोपाल बताते हैं कि पहले उनके परिवार में पारंपरिक रूप से सब्जी की खेती होती थी। मुनाफा भी कम होता था। इस साल आधा एकड़ खेत में टमाटर के साथ एक किलो स्वीट कॉर्न (मक्का) की खेती की। 2800 रुपए के मक्का बीज चार फीट की दूरी पर लगाए। बीच की खाली जगह में टमाटर लगाए। प्रयोग सफल रहा और 250 कैरेट टमाटर का उत्पादन कर 50 हजार रुपए कमा लिए। एक कैरेट टमाटर 200 रुपए में बेचा। स्वीटकॉर्न के 2500 भुट्टे करीब 10 रुपए में बेचकर 25 हजार रुपए कमाए।

गोपाल कहते हैं कि हर बार नई फसल लगाने से फायदा मिलता है। अभी पांच एकड़ में डी-कंपोस्ट खाद का उपयोग कर रहे हैं। बड़े शहरों में मिलने वाली ब्रोकली, स्वीटकॉर्न को जैविक तरीके से पैदा कर रहे हैं। सीजन के हिसाब से गिल्की, लौकी, भिंडी, बैंगन की पैदावार भी करते हैं। कीटनाशक भी खेत में ही तैयार कर रहे हैं।

आपदा में अवसर: कृषि विज्ञान केंद्र को अलसी-रामतिल बीज के लिए दे दी पूरी उपज

भास्कर संवाददाता | बनखेड़ी

बनखेड़ी के गुंदरई के दीपक माहेश्वरी ने आपदा को अवसर में बदला। गर्मी में जलस्तर गिरने के कारण रामतिल और अलसी को सोयाबीन, उड़द और बारिश की मूंग का विकल्प बनाया। अब तीनों भाई दो साल से 240 एकड़ जमीन पर रामतिल और तीन साल से अलसी का उत्पादन ले रहे हैं। दीपक बताते हैं कि पानी की कमी से फसल उत्पादन लेना कठिन हो रहा था। कृषि विज्ञान केंद्र सागर के डॉ. डीके व्यासी के मार्गदर्शन में रबी सीजन में खेत में दो किस्म की अलसी फसल लगाई। 20 से 22 क्विंटल प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन दिया। लागत 15 हजार रुपए लगी। रामतिल भी 10 से 15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हुई। उपज रिसर्च सेंटर सागर को बीज के रूप में दे दी।

इस कारण रामतिल बनी पसंद
- कम पानी में अच्छा उत्पादन।
- मवेशी नुकसान नहीं पहुंचाते।
- हृदय के लिए फायदेमंद।

संपर्क सूत्र
कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर
जिला – होशंगाबाद (म.प्र.)
पलिया–पिपरिया, तह– बनखेड़ी, होशंगाबाद (म.प्र.)
भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविंदनगर
@KGovindnagar Kvkgovindnagar +916264979854 kvkgovindgar2017@gmail.com